डॉ. समीर कुमार वर्मा (May 2021). शेरशाह सूरीः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
International Journal of Economic Perspectives,*15*(5) 4-12
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

शेरशाह सूरीः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. समीर कुमार वर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग
सत्यवती कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय

सार

शेरशाह सूरी मध्यकालीन भारतीय इतिहास में अपने अदम्य साहस व वीरता के लिए विख्यात है। शेरशाह के व्यक्तित्व में अद्भुत सैन्य प्रतिभा तथा कुटनीतिक योग्यता निहित थी इसलिए यह कहना कि उसके व्यक्तित्व में शेर व लोमड़ी के व्यक्तित्वों का मिश्रण था बिल्कुल सत्य प्रतीत होता है। शेरशाह सूरी ने अपने कुशल सैन्य प्रतिभा के दम पर मुगल सम्राट हुमायूं को चौसा के युद्ध में बुरी तरह पराजित कर अपने वीर पराक्रम व साहस का लोहा मनवाया था। चौसा युद्ध विजय के उपरांत उनकी वोरता के लिए शेर खाँ की उपाधि से सम्मानित किया गया था। शेरशाह के व्यक्तित्व की समझ का उत्तर भारत में अफगान एवं मुगलों के बीच निरंतर संघर्ष से लाभ की दृष्टि भी देखी जा सकती है। शेरशाह की सफलता में अफगान उत्तराधिकार के नियम का योगदान रहा था। वस्तुतः अफगान पद्धति में पति की मृत्यु के पश्चात उत्तराधिकार पुत्रों को न मिल कर पहले पत्नी को प्राप्त होता था। शेरशाह ने इस स्थिति का फायदा उठाया तथा लादमलिका एवं गौहरगोसाई जैसी समद्ध विधवा स्त्रियों के साथ विवाह कर अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ किया।

बीज शब्द :–शेरशाह का साम्राज्य निर्माण, प्रशासनिक संरचना, प्रांतीय प्रशासन, स्थानीय प्रशासन, भू–राजस्व प्रशासन।

शेरशाह सूरी के व्यक्तित्व व कृतित्व को समझने के लिए शासनकाल में उसके द्वारा किये गये विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न आयामों पर एक समदृष्टि देना आवश्यक है जिससे उसक साहस व वीरता के पराक्रम का परिचय हो सके। शेरशाह के व्यक्तित्व में शेर व लोमड़ी का मिश्रण था। यह उसके शासन के विभिन्न रूपों को देखने पर दृष्टिगत होता है जो निम्न है। सूर वंश के शासक शेरशाह सूरी ने केवल 5 वर्ष तक राज किया, लेकिन इतने

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author **डॉ. समीर कुमार वर्मा**
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

कम समय में उन्होंने हिन्दुस्तान की सूरत ही बदल दी। कालिकारंजन कानुनगो लिखते हैं "शेरशाह का शासन भले ही सिर्फ पाँच वर्षों का रहा हो, लेकिन शासन करने की बारीकी और क्षमता, मेहनत, न्यायप्रियता, निजी चरित्र के खारेपन हिन्दुओं और मुसलमानों को साथ लेकर चलने की भावना, अनुशासनप्रियता और रणनीति बनाने में अकबर से कम नहीं थे।

शेरशाह सूरी ऐसे मुस्लिम शासक हुए जिन्होंने धार्मिक सौहार्द को बढ़ावा दिया। असली राजा का धर्म निभाते हुए उन्होंने हिन्दू और मुस्लिम जनता को समान माना यहाँ तक कि उन्होंने अपने शासनकाल में हिन्दुओं को भी बड़े–बड़े पदों से नवाज़ा था। 'जनता का कल्याण' उनके शासन के केन्द्र में था। शेख रिज़ो उल्लाह मुश्तक़ी 'वकियत–ए–मुश्तकी "शेरशाह अपन लोगों के लिए पिता समान थे, असामाजिक तत्त्वों के प्रति वो काफी सख्त थे लेकिन दबे कुचले लोगों और शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के प्रति उनके मन में बहुत दया और प्यार था।" इस प्रकार जनता के प्रति उत्तरदायी शासक के रूप में शेरशाह सूरी का नाम इतिहास में दज है।

उनके समय का शासन–प्रशासन अत्यंत चुस्त था। शेरशाह ने सबसे पहले अपने पिता की जागीर ने सबसे पहले अपने पिता की जागीर के प्रबंधक के रूप में जानकारी प्राप्त की थी। मुगल सेवा में रहने के कारण मुगल प्रशासन सैनिक गठबंधन एवं वित्तीय व्यवस्था का पूर्ण ज्ञान लिया। यही कारण है, इतने कम शासनकाल में जो प्रशासन कार्य उन्होंने करके दिखाया उनकी गिनती दिल्ली के सर्वश्रेष्ठ सुलतानों में की जाती है। उनका प्रशासन अत्यंत केन्द्रीयकृत था क्योंकि शासक स्वयं ही शासन का प्रधान होता है। शासन की संपूर्ण भागदौड़ और शक्तियाँ उसके हाथ में होती थी। बंगाल विजय से पूर्व सूरी ने साम्राज्य को 47 सरकारों में विभाजित किया था। बंगाल सूबे के लिए एक अलग प्रकार की व्यवस्था की। पूरे सूबे को 16 सरकारों में बाँट दिया था। प्रत्येक सरकार को एक सैनिकअधिकारी के नियंत्रण में छोड़ दिया था। उसकी मदद के लिए एक असैनिक अधिकारी अमीर ए बंगाल को नियुक्त किया। यह पूरा प्रबंध विद्रोह की आशंका को समाप्त करने के लिए किया गया।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author **डॉ. समीर कुमार वर्मा**
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

प्रत्येक स्थान पर सरायों की व्यवस्था भी सूरी ने करवा दी। सैनिक सुधार में वह अलाउद्दीन खिलजी से प्रभावित था। सैनिक संगठन क्षेत्र में शेरशाह ने कार्य किया। वहीं दूसरी ओर भूराजस्व की धनराशि बकाया नहीं रहे, इसके लिए उन्होंने सुधार किए। उनकी लगान व्यवस्था रैयतवाड़ी थी जिससे किसानों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित किया गया था। यहाँ तक कि किसानों की मदद के लिए शेरशाह ने 'पहा' एवं कबूलियत को व्यवस्था शुरु की। किसानों को सरकार की ओर से पट्टे दिए जाते थे, जिनमें स्पष्ट किया गया होता था उस वर्ष उन्हें कितना लगान देना है। किसान 'कबूलियत पत्र' द्वारा इन्हें स्वीकार करते थे।

शेरशाह का शासनकाल भारतीय मुद्राओं के इतिहास में एक परीक्षण का काल है। स्मिथ लिखते हैं "यह रुपया वर्तमान ब्रिटिश मुद्रा प्रणाली का आधार है।" क्योंकि शेरशाह ने पुरथेसिस पिटे सिक्कों की जगह शुद्ध सोने–चाँदी एवं तांबे के सिक्कों का प्रचलन किया।

निर्माण के लिए भी शेरशाह सूरी को इतिहास और वर्तमान दोनों जानता है। शेरशाह का मकबरा हिन्दू–मुसलमान वास्तुकलात्मक विचारों का आनंदजनक मिश्रण प्रदर्शित करता है। वहीं किला–ए–कुहना, पुराना किला, शेर मंडल आदि निर्माण कला की गौरव गाथा कहते हैं। सड़क ऐ आजम का निर्माण भी सूरी ने कराया था। यह सोनारगाँव (बंगाल) से उत्तर (पश्चिम) पाकिस्तान में लाहौर तक जाती है।

फरीद से शेरशाह तक यात्रा कालिंजर विजय में समाप्त हो जाता है।

साम्राज्य निर्माण

पाँच वर्ष के कालांतराल में उसने कुछ महत्वपूर्ण सैनिक विजय हासिल की तथा बाबर और हुमायूँ की तुलना में एक बड़े साम्राज्य का निर्माण किया। उसका साम्राज्य पश्चिम में सिंधु नदी से लेकर पूरब में बंगाल तक फैला हुआ था।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author **डॉ. समीर कुमार वर्मा**
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

प्रशासनिक संरचना

1. केन्द्रीय प्रशासन –

अफगान पद्धति में केन्द्रीयकरण का तत्व कमजोर था क्योंकि वह जनजातिय पद्धति पर आधारित था। वहीं तुर्की पद्धति में कद्रोयकरण का तत्व ज्यादा प्रबल था। शेरशाह ने अफगान एव तुर्की पद्धति के बीच बेहतर सामन्जस्य लाने का प्रयास किया।

शेरशाह के अंतर्गत केन्द्रीय प्रशासन में वही चार प्रमुख विभाग स्थापित थे जो हम सल्तनत काल में भी पाते हैं। यथा– दीवान–ए–विजारत (राजस्व विभाग), दीवान–ए–इसा (पत्राचार विभाग), दीवान–ए–आरिज (सैन्य विभाग),दीवान–ए–रिसालत (धार्मिक विभाग)। यद्यपि यह सही है कि शेरशाह ने किसी नये विभाग की स्थापना नहीं की अपित् उसके काल में भी परंपरागत विभाग ही चलते रहे थे किन्तु उसने विभागाध्यक्षों की शक्ति में कटौती कर प्रशासनिक केन्द्रीकरणका प्रयास किया था।

2. प्रान्तीय प्रशासन –

वस्तुतः शेरशाह के काल में मानक प्रांतीय प्रशासन का प्रतिमान विकसित नही हुआ था, उसके काल में प्रशासनिक इकाई के रूप में सरकार ही महत्वपूर्ण रहा था, यह पीछे सल्तनत काल में कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में सुरक्षा कोध्यान में रखकर कई शिकों को मिलाकर रिव्ता अथवा विलायत नामक एक प्रशासनिक संगठन का निर्माण किया जाता था। शेरशाह के काल में यह पद्धति चलती रही।

3. स्थानीय प्रशासन –

शेरशाह के अन्तर्गत स्थानीय प्रशासन के इकाई के रूप में सरकार एवं परगना का विवरण मिलता है। सरकार के स्तर पर दो महत्वपूर्ण अधिकारी होते थे। यथाः शिकदार–ए–शिकदारान एवं मुंसिफ–ए–मुंसिफान जिसमें क्रमशः सामान्य प्रशासन तथा भू–राजस्व प्रशासन की देख–रेख करते थे। उसी प्रकार परगना के स्तर पर शिकदार एवं मुंसिफ नामक अधिकारियों की जानकारी मिलती है। वस्तुतः मानक स्थानीय प्रशासन का विकास करने का श्रेय शेरशाह को ही दिया जाता है।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author **डॉ. समीर कुमार वर्मा**
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

4. ग्रामीण प्रशासन –

प्रशासन की सबसे छोटी इकाईग्राम थी। यह मुखिया अथवा मुकद्दम के अन्तर्गत होता था। फिर गाँव मैं एक अद्धसरकारी अधिकारी भी होता था पटवारी भी कहा जाता था एवं जिसके पास भूमि का कागजात होता था।

5. भ्–राजस्व प्रशासन –

सासाराम के जागोरदार के रूप में शेरशाह को भू–राजस्व प्रबन्धन का एक लम्बा अनुभव रखा था। अतःशेरशाह में भु–राजस्व सुधार में विशेष रूचि दिखायी एवं कम से कम साम्राज्य के मुख्य क्षेत्र में उसने भूमि माप की पद्धति को पुनर्जीवित किया। शेरशाह की पद्धति जब्ती–प्रणाली के नाम से जानी जाती है।

अलाउद्दीन खिलजी एवं शेरशाह के भू–राजस्व सुधारों का तुलनात्मक अध्ययन :

अलाउद्दीन खिल्जी ने भ्–माप की पद्धति को पुनजीवित किया एवं उसके लिए वफा–ए–विस्बा को आधार बनाया। फिन्तु उसने भू–माप के लिए किन्तु प्रकार का पैमाना अपनाथा वह अस्पष्ट है। दूसरी तरफ शेरशाह ने भू–माप की इकाई के रूप में बीधा को आधार बनाया तथ भूमि–भाप के पैमाने के रूप में गज–ए–सिकन्दरी का उपयोग किया। जहाँ आलाउद्दोन खिलजी की पद्धति के नाम से जानी जाती थी वहीं शेरशाह की पद्धति जब्ती पद्धति के नाम से।

अलाउद्दोन खिल्जी ने भू–माप तो कराई किंतु भू–राजस्व के निर्धारण के पूव भूमि का वर्गीकरण नहीं किया। अतः उसकी पद्धति में एक बड़ा दोष यह था कि निर्धन किसानों पर राजस्व का अधिभार अधिक रहा। वहीं दूसरी तरफ, शेरशाह ने उत्पादकता के आधार पर भूमि का वर्गीकरण किया एवं इसे उत्तम, मध्यम एवं निम्न भूमि के रूप में तीन श्रेणियों में बांटा एवं इन तीनों प्रकार की भूमि का औसत निकालकर फिर भू–राजस्व का निधारण किया जाता था।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

वस्तुतः अलाउद्दीन खिलजो तथा शेरशाह के भू–राजस्व सुधार के पीछे उद्देश्य में ही अन्तर था जहाँ अगाउद्दोन खिलजी का उद्देश्य राजकीय आमदनी में वृद्धि के साथ मध्यस्थ तथा बिचौलियों को समाप्त करना था। किसानों की कहीं भी उसके उद्देश्य में शामिल नहीं था। वहीं दूसरी ओर शेरशाह के सुधारों का उद्देश्य राजकीय आमदनी में वृद्धि के साथ–साथ रैय्यतों की सुरक्षा भी रहा था। वस्तुतः मुहम्मद–बिन–तुगलकके काल से ही यह बात स्पष्ट हो गयी थी कि राजकीय आमदनी में वृद्धि केवल भू–राजस्व में वृद्धि के द्वारा नही किया जा सकता बल्कि इसके लिए भू–उत्पादन में वृद्धि भी आवश्यक है। यही वजह है कि शेरशाह ने उत्पादन में वृद्धि एवं रैयतों की सुरक्षा पर विशेष बल दिया। उसने यह घोषित किया कि किसान उत्पादन की घरी होते हैं जब तक किसानों को सुरक्षा नहीं मिलेगी उत्पादन में वृद्धि संभव नहीं होगा।

फिर शेरशाह की पद्धति थोड़ी अधिक विकसित थी।शेरशाह ने भ–राजस्व की वसूली के लिए एक वैज्ञानिक तरीका अपनाया अर्थात् उसने विभिन्न प्रकारकी फसलों पर राज्य की राजस्व दर निश्चित कर एक दर तालिका जिसे ''रय'' कहा जाता था।इसके अतिरिक्त उसने पठा तथा कबूलियत की पद्धति लागू की पहा रैयतों को दिया जाता था जो उसका अधिकार का होता था एवं कबूलियत में उसका दायित्व स्पष्ट किया जाता।

मध्यस्थों के प्रति भी अलाउद्दीन खिल्जी एवं शेरशाह का दृष्टिकोण अलग–अलग रहा। अलाउद्दीन खिलजी ने दोआब क्षेत्र में मध्यस्थ तथा बिचौलियों को पूरी तरह कुचल दिया एवं किसानों से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करने का प्रयास किया। किन्तु शेरशाह का दृष्टिकोण अधिक व्यावहारिक था। उसने मध्यस्थ तथा बिचौलियों को नियंत्रित किया किन्तु उन्हें कृषि अधिशेष से पूर्णतः वंचित नहीं किया।

शेरशाह ने भू–राजस्व की दर उत्पादन का 1/3 निर्धारित की। इसके अतिरिक्त उसने किसनों पर जरिबाना एवं मुहाससलाना नामक कर लगाया। जरिबाना के जन्तर्गत कुल उत्पादन का 2.5 प्रतिशत तथा मुहासिलाना 5 प्रतिशत होता था। इसके अतिरिक्त प्रत्येक बीघा पर 2.5 सेर के हिसाब से एक अतिरिक्तकर लगाया गया। इस अतिरिक्तराजस्व से राजकीय गोदामों को सुरक्षित किया जाता ताकि आपातकालीन स्थिति

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author **डॉ. समीर कुमार वर्मा**
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

में इसका उपयोग किया जा सके। दूसरी तरफ अलाउद्दोन खिलजी ने गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र में भू–राजस्व की दर कुल उत्पादन का 50 प्रतिशत निर्धारित की थी। फिर भी उसकी दर को सर्वाधिक नही माना जा सकता क्योंकि उसमे मध्यस्थ एवं बिचालियों को भू–राजस्व व्यवस्था से बाहर कर दिया था। इसके अतिरिक्त उसने धरी तथा चटी नामक कर भी लगाए।

शेरशाह का भू–राजस्व प्रशासन अलाउद्दीन खिलजी की तुलना में कहीं अधिक चस्त था। शेरशाह ने परगना तथा सरकार के स्तर पर एक बेहतर व्यवस्था कायम की थी फिर उसने किसानों की सुविधा के लिए कृषि ऋण की भी व्यवस्था की।

शेरशाह ने अपनी प्रशासनिक संरचना पर अफगान पद्धति की प्रभाव को समाप्त करने के लिए कौन स कदम उठाये।

(1) शेरशाह के द्वारा अफगान अमीरों की शक्ति में कटौती कर राजनीतिक सत्ता के कद्रोयकरण का प्रयास।

(2) शेरशाह ने यह आदेश जारी किया कि अफगानों के उत्तराधिकार के नियम राजकीय सेवा में लागू नहीं होगा।

शेरशाह के मुल्यांकन में इतिहास लेखन संबंधी विवाद :

परंपरागत इतिहासलेखन में शेरशाह के काल को महान उपलब्धियों का काल करार दिया गया एवं उसे लगभग सभी क्षेत्रों में अकबर का पूर्वगामो बताया गयाकिन्तु परवती काल के शोधों के आधार पर यह पाया गया कि दो कारणों से शेरशाह की उपलब्धियों थोड़ी बढ़ा–चढ़ाकर दिखायी गयी है, प्रथम शेरशाह के मूल्यांकन के लिए आधुनिक इतिहासकार लगभग एक ही स्रोत पर निर्भर हो जाते हैं, और वह है अब्बास खां सरवानी के द्वारा लिखित पुस्तक तरीख–ए–शेरशाही, जबकि अब्बास खां सरवानी, जो उसके व्यक्तित्व से अधिक प्रभावित है, ने उसके व्यक्ति को बढ़ा–चढ़ाकर दिखाया है।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author **डॉ. समीर कुमार वर्मा**
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

उसी प्रकार, उसका दूसरा कारण है कुछ ब्रिटिशविद्वानों की भूमिका दूसरे शब्दों में कुछब्रिटिश विद्वानों ने अकबर के कद को छोटा करने के लिए शेरशाह के कद के थोड़ा बड़ा करके दिखाया है। इसलिए शेरशाह का भू–राजस्व मूल्यांकन करते हुए इस तथ्य का ध्यान रखना भी आवश्यक है।

शेरशाह एक महान विजेता ही नहीं अपितु वह एकयोग्य प्रशासक भी था। दूसरे अफगान साम्राज्यकी स्थापना के पश्चात उसकी मूल चिन्ता इससाम्राज्य की नीव को मजबूत करने पर रही थी। उसने प्रथम अफगान राज्य की विफलता सेभी सबक लिया था एवं यह जान पाया था कि प्रथम अफगान राज्य की विफलता का कारण था। विच्छेदकारी शक्तियों का सक्रिय होना अतःउसने इन शक्तियों पर नियंत्रण रखने के लिएकई महत्वपूण कदम उठाए। यद्यपि वह अपनीप्रशासनिक संरचनाको पूरी तरह अफगान विरासत के प्रभाव से मुक्त नहीं कर सका।

(ii) केन्द्रीय प्रशासन में केन्द्रीयकरण के तत्वों को भी प्रोत्साहन देते हुए विभागाध्यक्षों की शक्ति में कटौती।

(iii) उसने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि उत्तराधिकार के नियम, सरकारी सेवा अथवा राजकीय पद पर लागू नहीं होंगे, बदले में उसने राजकीय खजाने को सुदृढ़ीकरण रखने, सक्षम सैन्य व्यवस्था आदि पर बल दिया साथ ही उसने अफगान अमोरों की शक्ति में कटौती की।

(iv) उसने स्थानीय प्रशासन का एक मानक ढांचा विकसित किया। राज्य की एक सक्षम सैन्य आर्थिक आधार देने के लिए उसने भू–राजस्व सुधार के लिए कदम उठाया।

(v) इतना ही नहीं शेरशाह ने अन्य प्रकार के आर्थिक सुधारों में भी रूचि ली। वाणिज्य–व्यापार को प्रोत्साहन देने के लिए महत्वपूर्ण मार्ग निर्माण, मानक मुद्रा का प्रचलन, चुंगो प्रणाली को व्यवस्थित करना आदि।

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author **डॉ. समीर कुमार वर्मा**
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. मध्यकालीन भारत, चन्द्र सतीश, ओरिएंट ब्लैकस्वांन, 2009.

2. History of Sher Shah Sur, I.H. Siddiqi, Aligarh, 1971.

3. The Administration of the Mughal Empire, I.H. Quereshi, Karachi, 1966.

4. The Life and Times of Humayun, Ishwari Prasad, Calcutta, 1955.

© 2021 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author डॉ. समीर कुमार वर्मा
Submitted: 12 Jan 2021, Revised: 09 March 2021, Accepted: 18 May 2021, Published 30 May 2021